अध्याय - 2   Pol.Sc. कक्षा 12

'दो ध्रुवीयता का अंत'

Page :
Date : / /

1

दो ध्रुवीयता :

× शीतयुद्ध के दौरान पुरी दुनिया दो खेमों में बंटती जा रही थी जिसमें एक खेमे का मुखिया अमेरिका था जिसमें पूंजीवादी देश व उसके समर्थक देश शामिल थे, दुसरे खेमे का मुखिया सोवियत संघ था जिसमें साम्यवादी देश व उसके समर्थक देश थे, इसे दो ध्रुवीयता कहा जाता है।

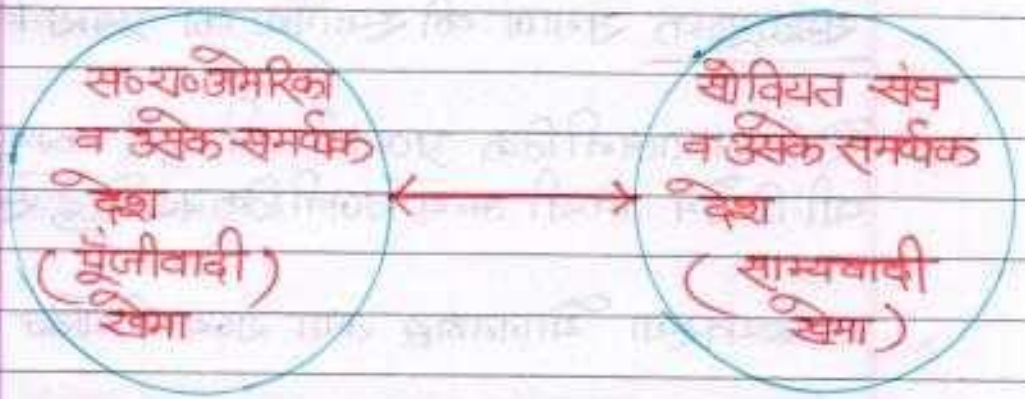

× बर्लिन की दीवार :

× यह दीवार 1961 में बनी जो साम्यवादी पुर्वी जर्मनी तथा पूंजीवादी पश्चिमी जर्मनी को अलग करती थी,

× यह दीवार शीतयुद्ध का सबसे बड़ा प्रतीक थी,

× 1989 में पुर्वी जर्मनी की आम जनता द्वारा इसे गिरा दिया गया।

Page :
Date : / /

सोवियत प्रणाली :

- सन् 1917 की समाजवादी क्रांति के बाद समाजवादी सोवियत गणराज्य (यू० एस० एस० आर०) अस्तित्व में आया जो 15 गणराज्यों से मिलकर बना था,
- इन 15 गणराज्यों में रूस का हर मामले में प्रभुत्व था,
- सोवियत प्रणाली के तहत समाजवाद के आदर्शों तथा समतामूलक समाज की स्थापना का प्रयास किया गया,
- सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी जिसमें किसी अन्य राजनीतिक दल को स्थान नहीं था,
- अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध तथा राज्य नियंत्रित थी,
- सरकार ने अपने नागरिकों के लिए एक न्यूनतम जीवनस्तर सुनिश्चित किया था,
- सरकार बुनियादी जरूरत की चीजें जैसे - स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा, बच्चों की देखभाल तथा लोककल्याण की अन्य चीजें रियायती दर पर मुहैया करती थी,
- भूमि तथा अन्य उत्पादक संपदाओं पर राज्य का नियंत्रण था,
- बेरोजगारी नहीं थी,
- 1970 के दशक के अंतिम वर्षों में यह व्यवस्था लड़खड़ाने लगी और अंततः ढह गयी,

मिखाइल गोर्बाचेव :

- 1980 के दशक के मध्य में मिखाइल गोर्बाचेव सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने।
- गोर्बाचेव ने पश्चिम के देशों से सम्बन्धों को सामान्य बनाने, सोवियत संघ को लोकतांत्रिक रूप देने और सुधारों को लागू करने का फैसला किया।
- इन्होंने पेरेस्त्रोइका (अर्थात पुनर्रचना) और ग्लासनोस्त (अर्थात खुलापन) के सूत्र दिये।

सोवियत संघ का विघटन :

- सन् 1991 में येल्तसिन के नेतृत्व में रूस, यूक्रेन व बेलारूस ने सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की।
- स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल बनाया गया।
- रूस को सोवियत संघ का उत्तराधिकारी बनाया गया।
- उत्तराधिकार में रूस को सुरक्षा परिषद् की स्थाई सदस्यता, परमाणु शक्ति सम्पन्न देश का दर्जा, सोवियत संघ द्वारा की गयी अन्तर्राष्ट्रीय संधियों व करारों को निभाने का जिम्मा प्राप्त हुआ।
- येल्तसिन रूस के प्रथम राष्ट्रपति बने।
- बोरिस येल्तसिन को, साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण के दौरान रूसी लोगों को हुए कष्ट का जिम्मेदार माना गया।

सोवियत संघ के विघटन के कारण :

- सोवियत संघ की राजनीतिक व आर्थिक संस्थाओं की अंदरूनी कमजोरी जो कि लोगों की अपेक्षाओं को पूरा न कर सकी,
- सोवियत संघ द्वारा परमाणु हथियारों व सैन्य साजो-सामान पर अधिक खर्च करना,
- पश्चिमी देशों की तरक्की के बारे में आम लोगों की जानकारी बढ़ना,
- सोवियत संघ का प्रशासनिक व राजनीतिक रूप से गतिरुद्ध हो जाना,
- मिखाइल गोर्बाचेव के सुधारों की धीमी गति होना,
- सोवियत गणराज्यों (रूस, एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया, उक्रेन, जार्जिया) में राष्ट्रवादी भावनाओं व सम्प्रभुता की इच्छा का उभरना,

सोवियत संघ के विघटन के परिणाम :

- शीतयुद्ध का अंत हुआ,
- हथियारों की होड़ समाप्त हुई और एक नई शांति की सम्भावना का जन्म हुआ,
- विश्व राजनीति में शक्ति-सम्बन्ध बदल गये, अमेरिका

विश्व में अकेली महाशक्ति बन गया,

- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रभुत्व बढ़ा,
- विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएँ विभिन्न देशों की ताकतवर सलाहकार बन गई,
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नये देशों का उदय हुआ,

शॉक थैरेपी :

- पूर्व के साम्यवादी देशों को पूँजीवाद की ओर ले जाने हेतु विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्देशित मॉडल को शॉक थैरेपी कहा गया,
- शॉक थैरेपी के तहत निजी स्वामित्व को सर्वोपरि मान्यता दी गई,
- इसके अन्तर्गत राज्य की सम्पदा के निजीकरण व व्यावसायिक स्वामित्व के ढाँचे को तुरंत अपनाने की बात शामिल थी,

शॉक थैरेपी के परिणाम :

- शॉक थैरेपी से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई तथा पूरे क्षेत्र की जनता को बर्बादी की मार झेलनी पड़ी,
- रूस में राज्य नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा गया,

90% उद्योगों को निजी हाथों या कम्पनियों को औने-पौने दामों में बेचना पड़ा

- रूसी मुद्रा रूबल के मूल्य में नाटकीय ढंग से गिरावट आई। मुद्रा स्फीति बढ़ने से लोगों की जमा पूँजी जाती रही,
- सामूहिक खेती प्रणाली समाप्त होने से खाद्यान्न सुरक्षा नहीं रही,
- सरकारी रियायतों के खत्म के कारण अधिकांश लोग गरीबी में पड़ गये,
- अमीर-गरीब के बीच बहुत आर्थिक असमानता आ गई,
- कई देशों में एक माफियावर्ग उभरा जिसने अधिकांश आर्थिक गतिविधियों को अपने नियंत्रण में ले लिया,

पूर्व साम्यवादी देश व भारत : (भारत रूस सम्बन्ध)

- भारत ने सभी पूर्व साम्यवादी देशों से अच्छे सम्बन्ध बनाये हैं,
- रूस जो कि सोवियत संघ का उत्तराधिकारी है के साथ भारत के सबसे गहरे सम्बन्ध हैं,
- भारत, रूस, तुर्कमेनिस्तान, कजाकिस्तान से ऊर्जा आयात को बढ़ाने की कोशिश कर रहा है,

- भारत व रूस का सपना बहुध्रुवीय विश्व का है जिसमें शक्ति के अनेक केन्द्र हों व सुरक्षा की सामूहिक जिम्मेदारी हो।

- भारत का रूस से अपने सम्बन्धों के कारण कश्मीर, ऊर्जा-आपूर्ति, आतंकवाद पर सूचनाओं के आदान-प्रदान, पश्चिम एशिया में पहुँच बनाने, चीन के साथ अपने सम्बन्धों में संतुलन बनाने जैसे मामलों में फायदा हुआ है।

- रूस का फायदा यह है कि भारत रूस से हथियारों का सबसे बड़ा खरीददार देश है। इसके साथ ही भारत रूस से तेल आयातक व ऊर्जा आयातक देशों में से एक है।

- रूस भारत की परमाणविक योजना व अंतरिक्ष उद्योग में भी महत्वपूर्ण मददगार देश है।

समाप्त

PREPARED BY-
RAJENDRA JOSHI
LECTURE POL. SC.
G. I. C. THARKOT-BALAKOT
PITHORAGARH